Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MMHAPU
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 09/06/2021

जनसंचार के अन्य मनोवैज्ञानिक सिद्धांत.....

- **प्रबलीकरण या सुदृढ़ीकरण का सिद्धांत (Reinforcement Theory)**

जोसेफ क्लैपर **Joseph Klapper** ने अपनी पुस्तक **'द इफेक्ट्स ऑफ मास कम्युनिकेशन' (The effects of Mass Communication,1960)** में मीडिया के सीमित प्रभावों पर ध्यान केंद्रित हुए चयनित प्रक्रियाओं के आधार पर सुदृढ़ीकरण सिद्धांत को समझाया। टेलीविजन तब तक मास मीडियम नहीं बना था। इस सिद्धांत के अनुसार, मास मीडिया उनके द्वारा कोई बदलाव लाने में सक्षम नहीं है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्लैपर ने सामाजिक और धार्मिक कारकों जैसे मध्यस्थ कारकों और प्रभावों का एक गठजोड़ कहा है जो मुख्य रूप से दर्शकों को प्रभावित करता हैं और मीडिया एक सहायक भूमिका निभाता है। मीडिया का प्रत्यक्ष प्रभाव तभी पड़ता है जब मध्यस्थ कारक काम नहीं करता। इस सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि ऐसी कम स्थितियां हैं जहां मीडिया का प्रभाव दर्शकों पर सीधा पड़ता है और क्या मीडिया परिवर्तन लाने के लिए एक योगदानकर्त्ता एजेंट के रूप में कार्य करता है? यह संचार की स्थिति या मीडिया और संचार के विभिन्न पहलुओं पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, जब एक निश्चित राजनीतिक विचारधारा के परिणामस्वरूप, एक स्थान पर सांप्रदायिक दंगे होते हैं तो मीडिया से नैतिक संयम के साथ और बिना सनसनीखेज के रिपोर्ट करने की उम्मीद की जाती है, लेकिन मीडिया से स्थिति को शांत करने की उम्मीद और उपयोगी कार्रवाई करने की उम्मीद नहीं की जा सकती है। यह केवल समाज, राजनीति और धर्म के प्रभावशाली वर्ग की प्रमुख धारणाओं की रिपोर्ट करता है जो दर्शकों को अलग–अलग तरीके से प्रभावित करती है।

इस सिद्धांत में अधिक बल जनसंचार माध्यमों के द्वारा राजनीतिक और सामाजिक मूल्यों एवं संरचना पर पड़ने वाले प्रभावों या प्रबलीकरण पर जोर दिया जाता है। इसके अंतर्गत जनमाध्यमों के हिंसात्मक चित्रण एवं राजनीतिक संचार में जनमाध्यमों की भूमिका पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसके अंतर्गत कुछ लोग जनमाध्यमों में हिंसा प्रदर्शन समाज में हिंसा को बढ़ानेवाला मानते हैं। यह मान्यता कुछ लोगों की होती है। कुछ अनुसंधानों से जनमाध्यमों के प्रभाव का स्पष्टीकरण होता है। एक स्कूल की मान्यता के अनुसार यह विचार गलत है कि जनमाध्यम हिंसा को सीधे बढ़ाता है। अनुसंधानों से स्पष्ट होता है कि जनसंचार माध्यम सीधे एवं सामान्य रूप से श्रोताओं के व्यवहार को हिंसात्मक दिशा में मोड़ने में महत्वपूर्ण भमिका निभाता है।

P.F. Lazarsfield, B. Berelson, H.Gaudet in 'The People's Choice' 1948 में राजनीतिक संचार प्रभाव में जनसंचार माध्यम की भूमिका को मतदान व्यवहार पर स्पष्ट

किया तथा इसे प्रकाशित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि जनमाध्यम का मुख्य प्रभाव विद्यमान राजनीतिक प्राथमिकता को प्रबल करता है। अनेक अनुसंधानों से स्पष्ट होता है कि जन माध्यम संगठनों एवं प्रभावी राजनीतिक संस्थाओं में स्पष्ट सम्बंध होता है।

- **संतुलन का सिद्धांत (Balance Theory)**

इस सिद्धांत का प्रतिपादन वर्ष **1946** में **फ्रिट्ज हीडर (Fritz Heider)** ने किया। एक मनोवैज्ञानिक के रूप में हायडर ने बताया कि किस तरह एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या दूसरे लक्ष्य के प्रति अपने व्यवहार, सम्बंध को संचालित करता है। इन्होंने मनुष्य के संज्ञानात्मक पहलुओं का अध्ययन करते हुए किसी खास संदर्भ में दो व्यक्तियों की अभिवृत्तियों का पता लगाने के प्रयास किया है। यह सिद्धांत इस विषय पर केंद्रित है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति तथा वस्तुओं के परस्पर सम्बंधों के प्रति अपनी अभिवृत्तियों का निर्माण किस प्रकार करता है। इनके अनुसार यह काम उसके संज्ञानात्मक स्तर पर होता है और इन अभिवृत्तियों में संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता पड़ती है। अगर किसी वजह से संतुलन कायम नहीं हो पाता है तो असंतुलन की वजह से तनाव उत्पन्न हो सकता है। इन्होंने कहा कि ''उस अवस्था को संतुलित अवस्था कहते हैं जिसमें स्वीकार की गयी इकाईयों, विचार, अनुभव या भावनाएं बिन किसी तनाव के स्वीकार की जाती है। हीडर ने जो उदाहरण दिया वह दो व्यक्तियों के सम्बंधों पर केंद्रित है जिसमें दो व्यक्ति है– एक व्यक्ति (P) और एक अन्य व्यक्ति (O) और इन दोनों का सम्बंध एक भौतिक वस्तु अथवा किसी विचार अथवा घटना (X) से है। हीडर ने बताया कि इन तीन तत्वों के प्रति एक व्यक्ति (P) का व्यवहार संचालित होगा। इन्होंने इन तीनों तत्वों के बीच दो प्रकार के सम्बंधों की व्याख्या की। यह सम्बंध या तो असंतुलन के हो सकते हैं या संतुलन के। इस उदाहरण में ''यदि तीनों तत्वों के बीच सभी परिस्थितियों में तीनों सम्बंध सकारात्मक हैं तो वह अवस्था संतुलित अवस्था होगी।'' इसके अलावा अन्य सम्बंधों (तीनों नकारात्मक सम्बंध या दो सकारात्मक सम्बंध) की अवस्था असंतुलन की अवस्था होगी। असंतुलन की अवस्था अस्थिर होती है और यह मानसिक तनाव पैदा करती है। यह तनाव तभी दूर हो सकता है जब असंतुलित स्थिति में परिवर्तन हो और संतुलन की अवस्था प्राप्त की जाए। एक संचारक के लिए यह सिद्धांत रूचिकर है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि किस परिस्थिति में व्यक्ति का व्यवहार परिवर्तित होता है और किस परिस्थिति में अपरिवर्तित रहता हैं। असंतुलित अवस्था एक अस्थायी अवस्था होती है। संतुलित अवस्था स्थायी अवस्था होती है और यह परिवर्तन का विरोध और मुकाबला करती है। हीडर का सिद्धांत काफी रोचक है। इन्होंने अनेक समाज मनोवैज्ञानिक शोधों को प्रभावित किया है।

****